गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

संत लीलाशाह सिंधी अध्ययन केन्द्र

द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में सिंधी और हिंदी का योगदान

13 मार्च 2023 प्रात: 10:00 बजे

सह-आयोजक: हिन्दी अध्ययन केन्द्र

आयोजन स्थल

सेमीनार हॉल, सेक्टर, 29, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

संकल्पना

सिंधी भाषा और साहित्य अत्यंत समृद्ध है। सिंधी क्षेत्र की सामरिक स्थिति ऐसी रही है कि हजारों वर्षों से भारत पर होनेवाले आक्रमणों का सामना उन्हें करना पड़ा है। परिणामस्वरूप सिंधी भाषा और इसके साहित्य में स्वाधीन चेतना, संघर्ष और समन्वय की विशेष धारा नजर आती है। सिकंदर से लेकर अंग्रेजों तक से उत्कट संघर्ष का यह क्षेत्र गवाह रहा है। हूंदराज दुखायल, शेख अयाज, नारायण श्याम जैसे अनेक कवियों ने स्वाधीनता संघर्ष में अपनी वाणी से स्वाधीन चेतना का संचार किया।

हिन्दी इस देश की सम्मिलित आवाज है जिसने इस विशाल देश को एक सूत्र में पिरोने में और इस बहुभाषी देश की विविधता को एकता में बदलने में बड़ी भूमिका निभायी है। हिन्दी भाषा और इसके साहित्य की सबसे बड़ी भूमिका स्वाधीनता संघर्ष के दौरान देखने को मिलती है। यह वह दौर था जब साहित्यकार, पत्रकार और नेता तीनों एक धरातल पर मिल रहे थे और भाषा और साहित्य के माध्यम से देश में नयी चेतना का निर्माण करने के साथ-साथ हिन्दी भाषा को भी एक विकसित रूप दे रहे थे।

उद्देश्य

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से सिंधी और हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त स्वाधीनता संघर्ष के सूत्रों को समझने और व्याख्यायित करने का प्रयास किया जाएगा। स्वाधीनता सेनानियों ने जिस दृढ़ इच्छा शक्ति और समर्पण के साथ भाषा और साहित्य की सेवा की थी और देश के निर्माण में इनके महत्व को समझा था, उसे बार-बार रेखांकित करने की आवश्यकता है। संगोष्ठी के लिए निम्नलिखित उपविषयों पर शोध पत्र आमंत्रित हैं-

- सिंधी-हिन्दी कविता में स्वाधीन चेतना
- सिंधी-हिन्दी गद्य में स्वाधीन चेतना
- सिंधी-हिन्दी पत्रकारिता और स्वाधीनता संघर्ष
- सिंधी-हिन्दी साहित्य और राष्ट्रीय एकता

इच्छुक प्रतिभागियों हेतु निर्देश

- प्रतिभागियों को किसी प्रकार का यात्रा भत्ता और आवास देय नहीं होगा।

- पंजीयन शुल्क संकाय सदस्य 600/- एवं शोधार्थी 300/- देय होगा| पंजीयन की अंतिम तिथि 10 मार्च 2023 है। पंजीयन के लिए नीचे दिए गए लिंक पर गूगल फार्म भरें: https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSct1irIt7zmXuFrW19esQC2d6WyQXE6ryDqWfhX9GbC67lhg/viewform?usp=sf_link ..

  यह प्रपत्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट से भी डाउनलोड कर मेल पर भेज सकते हैं।
- शोध पत्र दिनांक 10 मार्च 2023 तक एम.एस.वर्ड और पीडीएफ फाईल में मेल करें|
- आलेख टंकण का कार्य एरियल यूनिकोड (देवनागरी) या यूनिकोड मंगल में करवाएं।
- चयनित शोध पत्रों को सम्पादित पुस्तक (आईएसबीएन) में प्रकाशित किया जाएगा|

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना भारत की संसद द्वारा 2009 में केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम के तहत किया गया। यह विश्वविद्यालय भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक उन्नति हेतु ज्ञान के प्रचार और अध्ययन-अध्यापन में नवाचार को बढ़ावा देता है। विश्वविद्यालय का ध्येय मानवीय मूल्य एवं लोक व्यवहार के साथ-साथ आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में स्वयं को स्थापित करने का है।

राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (एनसीपीएसएल)

सिंधी भाषा के संवर्धन एवं उसमें वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के साथ-साथ आधुनिक संदर्भों में विचारों को विकसित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत 1994 में एक स्वायत्त पंजीकृत संस्था के रूप में राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद को स्थापित किया गया था।

संत लीलाशाह सिंधी अध्ययन केन्द्र

संत लीलाशाह सिंधी अध्ययन केन्द्र की स्थापना गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में सिंधी भाषा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (एनसीपीएसएल) नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से की गई थी। यह केंद्र सिंधी भाषा और साहित्य के उल्लेखनीय पक्षों को प्रकाश में लाने और अन्य भाषाओं के लोगों से उसे जोड़ने के लिए लगातार प्रयासरत है।

हिंदी अध्ययन केंद्र के बारे में

वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका और भारत की सामासिक संस्कृति के निर्माण के प्रति हिंदी अध्ययन केंद्र सजग है। भारत जैसे एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के कारण हिंदी विभिन्न भाषा-भाषी समाजों और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करती है। हिंदी अध्ययन केंद्र सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ उपेक्षित समूहों को केंद्र में लाने के लिए हिंदी की भूमिका को महत्त्वपूर्ण मानता है। हिंदी भाषी क्षेत्र का मौखिक साहित्य अत्यंत समृद्ध है जिसका सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन कई अछूते आयामों को उद्घाटित कर सकता है। यह केंद्र मौखिक साहित्य एवं हाशिए के साहित्य के अध्ययन पर विशेष बल देता है।

संरक्षक

प्रो. रमाशंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर

डॉ. मोहन मंघनानी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद

प्रो. रविप्रकाश टेकचंदानी, निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद

प्रो. संजीव कुमार दुबे, मानद निदेशक, संत लीलाशाह सिंधी अध्ययन केन्द्र

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी (9868097199)

सहायक आचार्य, हिंदी अध्ययन केंद्र

संयोजक मंडल

डॉ. अजय सिंह चौहान, मानद उपनिदेशक, संत लीलाशाह सिंधी अध्ययन केन्द्र

प्रो. विपुल कुमार, हिंदी अध्ययन केंद्र

डॉ. गजेन्द्र कुमार मीणा, हिंदी अध्ययन केंद्र

डॉ. प्रेमलता देवी, हिंदी अध्ययन केंद्र

डॉ. संध्या राय, हिंदी अध्ययन केंद्र

ई-मेल: sindhiseminarcug@gmail.com

संपर्क: मोनिका पारवानी (8384946544)